केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
जनकपुरी, नई दिल्ली
स्नातकोत्तर डिप्लोमा – पाठ्यक्रम
पाण्डुलिपिविज्ञान एवं पुरालिपिशास्त्र

प्रस्तावना

पाण्डुलिपिविज्ञान के अन्तर्गत प्राचीन हस्तलिखित प्रलेखों का वैज्ञानिक एवं संरचनात्मक अध्ययन किया जाता है। व्यापक अर्थ में किसी भी प्रकार के आधार पर लिखित पाठ्य सामग्री या दस्तावेज जिन में अभिलेख, वृक्ष के पत्रों पर लिखित लेख, धातु पत्रों पर उत्कीर्ण लेख, हस्तलिखितग्रन्थ, तथा विविध प्रकार की पुरातात्विक वस्तुओं पर प्राप्त लेख आदि है, यह सभी पाण्डुलिपि विज्ञान के क्षेत्र में समाहित हैं। किसी भी देश या संस्कृति की गौरव पूर्ण विरासत इन्हीं प्राचीन लेखों के द्वारा उजागर और भावी पीढ़ी तक संक्रान्त होती है। प्राचीन पाण्डुलिपि ग्रन्थ हमारी बौद्धिक सम्पदा के संवाहक हैं। पाण्डुलिपि विज्ञान में प्राचीन पाण्डुलिपियों का अन्वेषण, संग्रहण, सूचीकरण, परिरक्षण– संरक्षण, सम्पादन, पाठभेद, समीक्षात्मक-ग्रन्थसम्पादन तथा प्रकाशन आदि विषयों का अध्ययन समाहित है। आज पाण्डुलिपिविज्ञान को विज्ञान के रूप में स्वीकार किया जाता है।

पाण्डुलिपिविज्ञान यद्यपि एक स्वतन्त्र विद्याशाखा है परन्तु इसका अनेक विषयों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अन्य अनेक विषयों के साथ ही पाण्डुलिपिग्रन्थों और पुरालेखों को पढ़ने के लिए पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान की आवश्यकता होती है, अतः यह पाण्डुलिपिविज्ञान का अनिवार्य अंग है। प्राचीन लिपियों में लिखित इन पुरालेखों का अध्ययन, शोध तथा प्रकाशन पुरालिपिशास्त्र के ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। पाण्डुलिपिविज्ञान के अध्ययन से अध्येता के बौद्धिक स्तर में वृद्धि होती है। इसके साथ ही पाण्डुलिपियों में निहित प्राचीन ज्ञान परम्परा के संरक्षण, उस पर शोध तथा उनकी प्रांसगिकता की समझ भी उत्पन्न होती है।यह शोध प्रविधि से सम्बद्ध उत्तम कौशल को विकसित करने में भी सहायक है।

[1] दृष्टि एवं लक्ष्य- (Vision & Mission)

1. इस पाठ्यक्रम की संरचना इस प्रकार की है, जिससे अध्येता में हस्तलेखों की पहचान करने, संरक्षण करने तथा सूची पत्रों के निर्माण की विधियों को सीखने की क्षमता उत्पन्न हो सकेगी।
2. यह पाठ्यक्रम अध्येता में पाण्डुलिपि ग्रन्थों के प्राथमिक प्रकाशन एवं पाठ समीक्षात्मक सम्पादन युक्त प्रकाशन की प्रविधियों के कौशल को विकसित करने में सहायक होगा।
3. इस पाठ्यक्रम की संरचना के अनुसार अध्येता को पाण्डुलिपिविज्ञान के सभी पक्षों के साथ, पुरालिपियों का, ग्रन्थ सम्पादन एवं प्रकाशन प्रक्रियाओं का सम्यक् ज्ञान प्राप्त होगा।
4. यह पाठ्यक्रम अध्येताओं में भारतीय ज्ञान परम्परा से सम्बद्ध प्रत्येक क्षेत्र में अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के खोज, सम्पादन, शोध एवं प्रकाशन की दिशा में रुचि उत्पन्न करने में सहायक होगा।